

RAMAKRISHNA MISSION VIDYAMANDIRA

(Residential Autonomous College under University of Calcutta)

B.A./B.Sc. THIRD SEMESTER EXAMINATION, DECEMBER 2014

SECOND YEAR

SANSKRIT (General)

Date : 24/12/2014

Time : 11 am – 2 pm

Paper : III

Full Marks : 75

1. যে কোন একটি প্রশ্নের উত্তর দাও : [1×12]
 - a) দুর্ভাসা কেন শকুন্তলাকে অভিশাপ দিয়েছিলেন? অভিশাপটি কি? সেই অভিশাপের নাটকীয় তাৎপর্য বিশ্লেষণ কর। [1+2+9]
 - b) বিদূষক কে? নাটকে তার উপস্থিতি অপেক্ষা অনুপস্থিতিটাই অধিক কার্যকর হয়েছে কেন আলোচনা কর।
 - c) অভিজ্ঞানশকুন্তল নাটকের প্রথমক্ষেত্র মত্ত হস্তী প্রবেশের নাটকীয় তাৎপর্য পর্যালোচনা কর।
2. যে কোন চারটি প্রশ্নের সংক্ষিপ্ত উত্তর দাও : [4×2]
 - a) অভিজ্ঞানশকুন্তল নাটকটি প্রথমে কোন্ ঋতুতে অভিনীত হয়?
 - b) ‘আশ্রমমুগোহয়ং ন হস্তব্যো ন হস্তব্যঃ’ - উক্তিটি কার? কখন কাকে উদ্দেশ্য করে এই উক্তি?
 - c) রাজা কিভাবে বুঝলেন যে, তিনি কণ্বাশ্রমের কাছেই এসে পড়েছেন?
 - d) শকুন্তলার পিতামাতার নাম কি? তাঁর প্রিয় সখীদ্বয় কে কে?
 - e) কিভাবে দুয়্যাস্তের এরূপ ধারণা হল যে শকুন্তলা ক্ষত্রিয়ের বিবাহযোগ্য?
 - f) অভিজ্ঞানশকুন্তল নাটকের ভরতবাক্যটি কি?
 - g) তপোবন কিভাবে শকুন্তলাকে পতিগৃহে যাত্রার অনুমতি দিয়েছিল?
3. যে কোন একটি পদ্যের বাংলা কিংবা ইংরাজীতে অনুবাদ কর। [1×6]
 - a) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आदौ वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥
 - b) ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुर्नुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम् ।
दर्भैरर्धावलीढैः प्रमविवृतमुखम्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्या प्रयाति ॥
 - c) अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम् ।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः ॥
4. যে কোন একটি পদ্যের সপ্রসঙ্গ ব্যাখ্যা লেখ। [1×8]
 - a) गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्थितं चेतः ।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य ॥
 - b) शमप्रधानेषु तपोधनेषु
गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः ।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्ता -
स्तदन्यतेजोऽभिभवाद् वमन्ति ॥

- c) उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलं
घनोदयः प्राक् तदनन्तरं पयः ।
निमित्तनैमित्तिकयोरयं क्रम-
स्तव प्रसादस्य पुरस्तु सम्पदः ॥

5. ये कोन एकটির ভাবসম্প্রসারণ কর।

- a) কিমিহি হি মধুরাণাং মণ্ডনং নাকৃতীনাং ।
b) অথবা ভবিতব্যানাং দ্বারাণি ভবন্তি সর্বত্র ।
c) অর্থো হি কন্যা পরকীয় এব ।

[1×6]

অথবা

যে কোন দুটির সংক্ষিপ্ত টীকা লেখ ।
সানুমতী, গৌতমী, ধনমিত্রঃ, মাতলি:

[2×3]

6. যে কোন একটি প্রশ্নের উত্তর দাও :

- a) মনুসংহিতা অবলম্বনে ব্যসন সম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনা কর ।
b) মনুসংহিতা অনুসারে রাজার উৎপত্তি ও মাহাত্ম্য বিষয়ে আলোচনা কর ।
c) মনুসংহিতা অনুসারে দুর্গনির্মাণ বিষয়টি ব্যাখ্যা কর ।

[1×10]

7. যে কোন একটি শ্লোকের বাংলা কিংবা ইংরাজীতে অনুবাদ কর ।

- a) यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे ।
मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः ॥
b) सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः ।
दण्डस्य हि भयात् सर्वं जगद् भोगाय कल्पते ॥
c) त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्याद् दण्डनीतिं च शाश्वतीम् ।
आन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्तारभ्यांश्च लोकतः ॥

[1×5]

8. যে কোন একটি পদ্যের সপ্রসঙ্গ ব্যাখ্যা লেখ ।

- a) अपि यत् सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् ।
विशेषतोऽसहायेन किमु राज्यं महोदयम् ॥
b) एवंवृत्तस्य नृपतेः शिलोञ्छनापि जीवतः ।
विस्तीर्यते यशो लोके तैलबिन्दुरिवाम्भसि ॥
c) यदि न प्रणयेद्राजा दण्डं दण्डयेष्वतन्द्रितः ।
शूले मत्स्यान् इवापक्ष्यन् दुर्बलान् बलवत्तराः ॥

[1×6]

অথবা

যে কোন দুটি বিষয়ে সংক্ষিপ্ত টীকা লেখ ।
গিরিदुर्गम्, षाड्गुण्यम्, उपायचतुष्टयम्, दूतगुणाः ।

[2×3]

9. যে কোন দুটি প্রশ্নের সংক্ষিপ্ত উত্তর দাও :

- a) অবিনয়ের ফলে যাঁদের সর্বনাশ হয়েছিল, এমন দুজন রাজার নাম লেখ ।
b) দুর্গের প্রকারগুলির নাম লেখ ।
c) ‘জাঙ্গল’ কথাটির অর্থ লেখ ।
d) রাজার মহিষী নির্বাচন সম্বন্ধে কী জান ?
e) ‘তজ্জাবেতাবুভৌ’ —সন্ধি বিচ্ছেদ কর ।

[2×2]

10. ये कोन एकटि अनुच्छेदर बांग्लाय अनुवाद कर।

[1×10]

- a) आकाशेऽनेके प्रकाशमानाः पिण्डा दृश्यन्ते। ते द्विविधाः सन्ति। केषाञ्चन पिण्डानामात्मनः प्रकाशोऽस्ति। केषाञ्चन पिण्डानामात्मनः प्रकाशो नास्ति। येषां पिण्डानामात्मन एव प्रकाशो भवति, ते पिण्डाः 'तारकाः' इति कथ्यन्ते। येषां पिण्डानामात्मनः प्रकाशो न भवति, किन्तु सूर्यस्य तारकाणां वा प्रकाशेन प्रकाशन्ते ते 'ग्रहाः' इत्युच्यन्ते। एतत्परिभाषानुसारं सूर्योऽप्येका तारकैव वर्तते। तथापि स पृथग् गण्यते। मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चराः सर्वेऽपि सूर्यस्य प्रकाशेनैव प्रकाशन्ते। अतस्ते ग्रहा इत्युच्यन्ते। ग्रहेषु शनैश्चरं परितः स्थित एको मनोहररूपो वलयो दृष्टिपथमायाति दूरवीक्षणेन विलोकने। अतो ग्रहाणां मध्ये स विलक्षणोऽस्ति।
- b) पुरातनकाले काश्मीरदेशः पाण्डित्यस्य महान् निधिरासीत्। आनन्दवर्धनादय आलङ्कारिकाः, जयन्तभट्टादयस्तार्किकाश्च तत्र व्यराजन्त। कालक्रमेण तत्रान्धकारः प्रसृतः। तथापि पण्डिताभिधाना जनाः परम्परां कष्टेन परिपालयन्ति स्म। देशस्वातन्त्र्यप्राप्त्यनन्तरं पण्डितानां दुर्गतिर्जाता। स्वदेशे एव ते निराश्रया अभवन्। बलप्रयोगेण ते स्वगृहेभ्यो दूरं निर्वासिताः। काश्मीरपण्डितानां क्लेशः वर्णनातीतो वर्तते। हिंसावादिभिः उग्रैः सहस्रशः पण्डिता मारिताः। समीक्षानुसारेण केवलं २००८-०९ तमे वर्षे एव चतुःशतं पण्डिता व्यापादिताः।

————— × —————